

Prof. Suresh Mishra Felicitation Volume - 2

Assessing and Criticising : Historical Writings of Prof. Suresh Mishra

प्रो. सुरेश मिश्र का इतिहास लेखन
मूल्यांकन एवं समालोचना

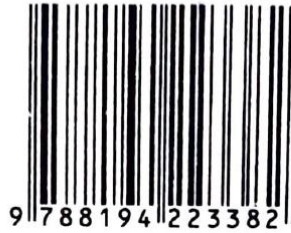


Chief Editor
Prof. Sanjay Swarnkar

© Editor

First Edition : 2019

ISBN : 978-81-942233-8-2



Radha Publications

4231/1, Ansari Road, Daryaganj

New Delhi-110002

Phone : 23247003, 23254306

Email : radhapub@gmail.com

Central Indian Historical Research Foundation

Gwalior, M.P

Published by Nitin Garg for Radha Publications and printed
by Asian Offset Press, Shahadra, Delhi-32

25. मराठों के गढ़ा-मण्डला के दस्तावेज (1715 से 1817 ई. तक) 220
लहू गायकवाड
26. भारतीय इतिहास के कुछ अनछुए पहलू 229
पंकज सिंह
27. ग्वालियर रियासत में 1857 का महासंग्राम 245
संजय स्वर्णकार
28. Ethnicity And Tribal State Formations In 261
Central India During Medieval Epoch
Sanjay Kumar
29. The Polity of The Gond Kingdom of Deogarh : 271
Assessment With A New Historical Perspective
Shreya Singh
30. Rani Awanti Bai Lodhi of Ramgarh -1857 279
Anuradha Mathur
31. History And Metamorphosis: A Review of 285
"The Gond Kingdom of Chanda"
Maitree Vaidya Sabnis
32. Suresh Mishra And Nandkishore Dewda –Burhanpur : 294
Unexplored History, Monuments And Society
Radhika Seshan,
33. Dr. Suresh Mishra, Shahzada Firoz Shah : 299
A Forgotten Hero of 1857
Hitendra Patel
34. Revisiting Tribal Uprisings In The 306
Nineteenth-Century India
Divya Kumar

भारतीय इतिहास के कुछ अनछुए पहलू

समीक्षक

डॉ. पंकज सिंह

सहायक प्राध्यापक, इतिहास विभाग,

डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय,

सागर, मध्यप्रदेश-470003

संपर्क- 9827116357, 9425856391

लेखक का नाम	:	सुरेश मिश्र
पुस्तक का नाम	:	भारतीय इतिहास के कुछ पहलू
प्रकाशक	:	राधा पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली-110002
संस्करण	:	2017
पृष्ठ संख्या	:	189
मूल्य	:	550.00

सामान्यतया जब हम इतिहास की बात करते हैं तो हमारा तात्पर्य उन घटनाओं की खोज और अध्ययन से होता है जो अतीत में घटित हुई। अध्ययन की प्रक्रिया में हम घटनाओं की पृष्ठभूमि में काम कर रहे हैं कुछ विशेष प्रवृत्तियों को भी लक्षित कर पाते हैं और इस तरह मनुष्य की यात्रा की प्रकृति और उसके लक्ष्य को पहचानने की कोशिश भी करते हैं सामान्य अर्थों में इसे ही इतिहास-दृष्टि कहा जाता है। प्रत्येक दर्शक-पद्धति एक इतिहास-दर्शन का भी विकास करती है यानी इतिहास को समझने की एक दृष्टि हमें देती है। इसे यों भी कह सकते हैं कि ऐतिहासिक तथ्यों के अध्ययन से ही एक जीवन-दर्शन का बोध विकसित होता है क्योंकि इतिहास वस्तुतः मनुष्य के होने का इतिहास है और इसलिए मनुष्य की अपनी पहचान भी इतिहास में से ही उभरती है।

सामान्यतया हम केवल उन घटनाओं और तथ्यों को ही इतिहास के लिए महत्वपूर्ण मानते हैं जिनका पूरा मानव समाज या उसके किसी एक अंश-देशबद्ध या